NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : **M.A Psychology, Part-II**

Paper : **Paper-XII**

Prepared by : **Dr. (Prof.) Prabha Shukla**
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : **अलाभान्वित बालक : अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार एवं शिक्षा**
(Disadvantaged Children : Meaning, characteristics, types & Education)

अलाभान्वित बालक : अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार एवं शिक्षा
(Disadvantaged Children : Meaning, characteristics, types & Education)

7.1 परिचय (Introduction)

अलाभान्वित बालकों से तात्पर्य उन बच्चों से है जो बाह्य कारणों से किसी-न-किसी सुविधा से वंचित रह जाते हैं। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार वे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित समुदाय से आते हैं। वर्ग में ऐसे बालकों की अलग पहचान होती है। अक्सर वे निर्जीव (lifeless) अनुत्सुक (incurious), धूर्त्त (deceptive) और बुद्धिहीन (unintelligent) दिखायी देते हैं। उनमें विश्वास का अभाव होता है और अपने आपको व्यक्त नहीं कर पाते हैं। वे कक्षा के किसी कार्यक्रम में भाग नहीं लेते और कक्षा में दिये गये निर्देशों के पालन में भी असफल रहते हैं। उन्हें किसी भी विषय को सीखने में बड़ी कठिनाई होती है। जो सीखते हैं, उसे याद करने में भी असफल होते हैं। इस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि इतनी कम होती है कि उन्हें एक कक्षा को दुहराना पड़ता है। या उन्हें स्कूल भी छोड़ना पड़ता है। कभी-कभी वे गंभीर अपराधिक मामलों से भी जुड़े होते हैं।

भारत में हरिजन एवं आदिवासी जाति के समुदाय से आनेवाले बच्चों को अलाभान्वित की श्रेणी में रखते हैं। इस तरह के बच्चे कई समुदाय से आते हैं जिनमें अनुसूचित जाति (Schedule Caste or SC) अनुसूचित जनजाति (Schedule Tribe or ST) और कुछ पिछड़ी जातियाँ शामिल हैं। ये बच्चे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से काफी पीछे या अविकसित होते हैं। ऐसे समुदाय के बालकों को हम अलाभान्वित बालक कहते हैं।

7.2 अलाभान्वित बालक के अर्थ एवं विशेषतायें (Meaning and Characteristics of Disadvantaged Children)

अलाभान्वित का साधारण अर्थ है किसी भी सुविधा से वंचित रह जाना। समाज में कई तरह की जातियाँ, जनजातियाँ, साधारण व विशिष्ट लोग होते हैं। उसी के अनुरूप सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक स्तर होते हैं जो पूरी जनसंख्या में समान रूप से वितरित नहीं होते हैं। आर्थिक-सामाजिक स्तर से तात्पर्य धन, शक्ति और प्रतिष्ठा से है। हालाँकि वैज्ञानिक इसे सच नहीं मानते क्योंकि धन, शक्ति और प्रतिष्ठा स्थायी नहीं होती। स्थायित्व के आधार पर सामाजिक आर्थिक स्तर के चार प्रभावशाली मापदंड हैं। उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, काम करने वाला वर्ग और निम्न वर्ग।

उच्च वर्ग की मासिक आय बहुत अधिक होती है। वे Corporate, professional या पारिवारिक धन सम्पत्ति के मालिक होते हैं। उनकी शिक्षा प्रतिष्ठित स्कूलों में होती है। उनका अपना मकान होता है और वे सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होते हैं। मध्यम वर्ग की आय इतनी होती है कि वे अपना खर्च उठा सकते हैं। इनकी शिक्षा हाई स्कूल, कॉलेज या व्यावसायिक स्कूलों में होती है। पड़ोस के साथ इनके सम्बन्ध अच्छे होते हैं। रोज काम कर अपनी जीविका पानेवाले व्यक्ति की आमदनी इतनी होती है कि वे अपना खर्च चला सकते हैं। इनकी पढ़ाई मुश्किल से हाई स्कूल तक होती है। निम्न वर्ग में ऐसे लोग होते हैं जिनकी आमदनी नियमित नहीं होती। ये किसी भी गुण में प्रवीण नहीं होते (unskilled labour) काम मिलने पर काम करते हैं अन्यथा बैठे रहते हैं। इस निम्न वर्ग से आने वाले बच्चे प्राय: अलाभान्वित होते हैं।

अलाभान्वित बच्चे कई नाम से जाने जाते हैं— वंचित (deprived) विशेषाधिकार से हीन (under

priviledged), सामाजिक रूप से अयोग्य (socially handicapped) सामाजिक सांस्कृतिक रूप से वंचित (socio-culturally deprived) और सामाजिक रूप से वंचित (socially disadvantaged) आजकल अलाभान्वित बच्चों के लिए समाज एवं सरकार दोनों मिलकर उनकी शिक्षा एवं बेहतरी के लिए कई प्रयास कर रहे हैं। अलग-अलग विद्वानों ने अलाभान्वित बच्चों की कई परिभाषायें दी हैं। अलाभान्वित बालक हम उन्हें कहते हैं—

(a) जिनकी प्रतिदैनिक मौलिक जरूरतों (भोजन, वस्त्र, घर) की पूर्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

(b) जो वातावरण जनित हानिकारक दबावों से ग्रसित होते हैं।

(c) जो बाल्यपन के मौलिक अधिकारों से वंचित रहते हैं (सुनिश्चित घर, माँ का प्यार) पिता द्वारा सुरक्षा (जो उसकी प्रति दैनिक जरूरतों को पूरा करता हो) खेलने की जगह, भाषा एवं मानसिक विकास की सुविधा एवं एक ऐसा स्वस्थ वातावरण जो बच्चे के 'स्वयं' (ego) के निर्माण में सहायक हो, इत्यादि सुविधाओं से वंचित रहते हैं।

(d) जिसका मनोशैक्षिक भविष्य दाँव पर लगा हो।

(e) सामान्य रूप से विकास के अवसर न मिले हों।

(f) उनकी यह ऐसी कमियाँ बाह्य कारणों से उत्पन्न हुई हों जिसमें उनके किसी भी आन्तरिक कारणों का समावेश नहीं हो।

अत: अलाभान्वन से ऐसे आन्तरिक अवस्था का बोध होता है जो बच्चों में बाह्य कारणों से उत्पन्न होता है।

समाज में अलाभान्वित बालकों पर कई अध्ययन किये गये हैं। प्रत्येक देश की सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्था दूसरे देश से भिन्न होती है, भारत में भी भौगोलिक स्थिति को देखते हुए कई अध्ययन हुए हैं जिनमें D. Sinha—1982, L.B. Tripathi—1982, B.B. Chatterjee—1980 एवं A.K. Singh—1986 का योगदान महत्वपूर्ण है। इन अध्ययनों के आधार पर अलाभान्वित बालकों की कई विशेषताएँ हैं—

(i) ऐसे बच्चे बहुत ही निम्न परिवार के गरीब बच्चे होते हैं और वंचन (deprivation) के आधार पर हीं इनकी पहचान होती है।

(ii) सामान्य बालकों की तुलना में ऐसे बच्चे बहुत हीं हीन एवं कमजोर होते हैं। उनमें आत्म संप्रत्यय (self concept) की कमी पायी जाती है और उनकी आकांक्षा अति साधारण होती है।

(iii) ऐसे बच्चे चूँकि वंचना के शिकार होते हैं अत: समाज में या वर्ग से उन्हें वह सुविधा नहीं मिलती जो सामान्य बच्चों को मिलती है। फलस्वरूप उनमें प्रेरणा की कमी पायी जाती है। अपनी स्थिति से संतुष्ट वे कुछ आगे करने की सोचते नहीं।

(iv) अलाभान्वित बालक निम्न सामाजिक स्तर से आते हैं इसलिए उनकी अस्पष्ट, अनर्गल एवं अधूरी होती है।

(v) अलाभान्वित बच्चों की बुद्धि भी मंद होती है। कई अध्ययनों से हुए बात की पुष्टि हुई है कि ऐसे बच्चों का बौद्धिक स्तर से काफी नीचे होता है। (D. Sinha—1982, B. B. Chatterjee—1982)

ऐसी कई विशेषताएँ हैं जिनके आधार पर अलाभान्वित बच्चों की पहचान होती है। अपनी भाषा, वेषभूषा एवं अंत:क्रिया (interaction) के निष्पादन के आधार पर हीं उन्हें अलाभान्वित बालक कहते हैं।

7.3 अलाभान्वित बालकों के प्रकार (Types of Disadvantaged Children)

अलाभान्वित बच्चों की कई श्रेणियाँ हैं जिनमें आर्थिक रूप से अलाभान्वित बच्चे, सामाजिक अलाभान्वित बच्चे, सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चे, शैक्षिक रूप से अलाभान्वित बच्चे, सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चे, और भाषा से सम्बन्धित अलाभान्वित बच्चे प्रमुख हैं। इन सभी श्रेणियों में वंचन की (deprivation) की प्रधानता होती है। किसी एक श्रेणी का वंचन सभी श्रेणियों के साथ जुड़ जाता है। फलस्वरूप आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं भाषा सभी श्रेणियों में बच्चे पीछे रह जाते हैं।

7.3.(a) आर्थिक रूप से अलाभान्वित बच्चे (Economically Disadvantaged Children) या निम्न सामाजिक स्तर आर्थिक स्तर (Socio-Economic Status—SES)—इस श्रेणी में ऐसे बालक आते हैं जो अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति से भी वंचित रह जाते हैं। उनके खाने, पहनने, रहने सभी का कोई स्थायी प्रबन्ध नहीं होता। उन्हें बहुत ही गरीबी में रहना पड़ता है।

(i) **Poor Occupational Status**—आर्थिक रूप से अलाभान्वित बच्चों के माता-पिता की कोई निश्चित आय नहीं होती। कभी-कभी उनके पास कोई काम ही नहीं होता (Broferbrenner, McClland, Wethington, Moch & Ceci—1996) फलस्वरूप उन्हें भरपेट भोजन भी नहीं मिलता। उनकी गरीबी का असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ता है। आर्थिक अलाभान्वन के साथ कई दूसरे अभाव भी होते हैं जैसे रहने की जगह न होना या अस्वास्थ्यकर घर समुचित कपड़ों का अभाव, अपौष्टिक भोजन इत्यादि ऐसे कारक हैं जो उनकी आर्थिक उपलब्धि से जुड़े होते हैं।

(ii) **Poor Health Care**—उनका स्वास्थ्य भी खराब होता है क्योंकि उनके भोजन में पौष्टिकता की कमी होती है। उनके सामने सिर्फ पेट भरने की समस्या होती है। अत: वे अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। उन्हें चिकित्सा की कोई सुविधा नहीं मिलती। संक्रामक रोगों से बचने के लिए जीवन रक्षक दवाईयाँ या टीके भी नहीं मिलते हैं। सफाई पर उनका ध्यान बिल्कुल ही नहीं जाता है। गर्भवती माताओं की अस्वास्थ्यकर देखभाल के कारण ज्यादातर बच्चे समय से पहले हीं जन्म लेते हैं। फलस्वरूप उनकी मृत्युदर भी अधिक होती है।

(iii) **आत्मविश्वास एवं आशा में कमी** (Low expectation – Low Self Esteam)—निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों में आत्म विश्वास एवं आशा की कमी पायी जाती है। गरीबी के कारण उनका रहन-सहन निम्न स्तर का होता है। वे अपनी जातीय (Elbnic) भाषा का प्रयोग करते हैं। उन्हें पुस्तकों एवं स्कूल के कार्यक्रमों की जानकारी नहीं होती है। फलस्वरूप पढ़ाई पर उनका ध्यान बिल्कुल नहीं होता। ऐसे बच्चे शिक्षक के लिए भी मुसीबत हो जाते हैं। शिक्षक निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों को वर्ग में पूरा अवसर नहीं देते। बच्चों को भी ऐसी धारणा हो जाती है। पढ़ाई में या कहीं भी अच्छा नहीं कर सकते। फलस्वरूप उनके आत्मविश्वास में कमी आ जाती है और भविष्य के लिए आशा करना ही छोड़ देते हैं।

(iv) **अर्जित निस्सहायता** (Learned Helplessness)—ऐसे सामाजिक-आर्थिक अलाभान्वित बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि इतनी कम होती है कि बार-बार कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिलती है। उन्हें ऐसा महसूस होने लगता है कि वे वर्ग की पढ़ाई में अच्छा कर हीं नहीं सकते और प्रयत्न करना हीं छोड़ देते हैं। पूरी तरह शिक्षित नहीं होने से उन्हें अच्छा काम नहीं मिलता है। उन्हें मजबूरन गरीबी रेखा के नीचे रहना होता है। अगर ऐसे बच्चे किसी जाति विशेष या नीची जाति के होते हैं तो इस धारणा से बहुत जल्दी प्रभावित होते हैं और सीखना हीं छोड़ देते हैं।

(v) **Poor Influences and Resistance Culture**—निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चों में एक प्रतिरोधात्मक भाव आ जाता है। वे सभी कार्यों में बाधा डालने की कोशिश करते हैं। अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए उन सभी व्यवहारों का त्याग करते हैं जो उन्हें सफल बना सकता है। अपनी पढ़ाई, साथियों के साथ अच्छा व्यवहार या फिर स्कूल आना हीं छोड़ देते हैं।

(vi) **Tracking**—निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों को निम्न शैक्षिक उपलब्धि का प्रमुख कारण Tracking है। Tracking का अर्थ पद-चिह्नों पर चलना होता है। निम्न आर्थिक स्तर के बच्चों की शिक्षा भी बिल्कुल अलग होती है। निम्न शिक्षा मिलने से उनकी शैक्षिक निपुणता भी कम होती है और उनके आगे बढ़ने का मौका भी कम हो जाता है।

(vii) **पालन-पोषण विधि** (Child rearing Styles)—आर्थिक सामाजिक स्तर पर अलाभान्वित बच्चों का घरेलू वातावरण दूषित होता है। उन्हें अपने माता-पिता से पूर्ण सहयोग नहीं मिलता है। किसी भी समस्या के उत्पन्न होने पर भी उससे निबटने की सलाह नहीं देते। उसे स्वयं अपने समस्या से जूझने की सलाह नहीं देते बल्कि समस्या का समाधान खुद हीं ढूँढ़कर दे देते हैं। लाभान्वित बच्चों के माता-पिता, बच्चों को समस्या समझने का अवसर देते हैं, योजनाओं को बनाने में मदद करते हैं और समस्या से जुड़ी प्रत्येक पहलुओं को परखने का अवसर देते हैं। घर में उनके व्यवहार के लिए कठोर अनुशासन, सही नियम स्नेह व संवेगात्मक संबल प्रदान करते हैं तो बच्चों का व्यवहार भी ठीक होता है और उनकी शिक्षा भी सुचारू रूप से चलती है। ठीक इसका उल्टा प्रभाव उन बच्चों पर होता है जिनके माता-पिता अपने बच्चों का पोषण सही ढंग से नहीं करते। या तो बहुत ज्यादा चिंता करते हैं (over protection) या फिर बिल्कुल चिन्ता नहीं करते।

(viii) **घरेलू वातावरण एवं साधन** (Home environment and Resources)—निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चों का घरेलू वातावरण बहुत हीं दूषित होता है। घर बहुत गंदी जगह में बना होता है। गंदी गलियों में बसने के कारण उनका स्वास्थ्य अक्सर खराब रहता है। घर बिल्कुल एक-दूसरे से सटा होता है। पड़ोसी भी ठीक नहीं होते। खेलने की जगह नहीं होती है। फलस्वरूप उनका शारीरिक और मानसिक विकास ठीक नहीं हो पाता है। अध्ययनों के आधार पर यह पाया गया है कि अलाभान्वित बच्चों को अगर संवेगात्मक सुरक्षा नहीं मिलती तो वे बोलने में, पढ़ने में, संज्ञानात्मक विकास में तथा सामाजिक विकास में काफी पीछे होते हैं।

निम्न आय वाले परिवार के बच्चों को साधनों की भी कमी होती है। सही ढंग से पढ़ाई न होने और समुचित साधन न मिलने के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि बहुत कम होती है। ऐसे अलाभान्वित बच्चों को

न पड़ोस से, न घर से कोई सहायता मिलती है न उन्हें समुचित साधन (पुस्तकें, कम्प्यूटर, लाइब्रेरी इत्यादि) मिलता है। फलतः उनकी क्षमता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

7.3.(b) सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चे (Socio-Culturally Deprived Children)—सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चों की श्रेणी में वैसे बालक आते हैं जो किसी जाति विशेष (Ethnic race) या समुदाय (community) का होने के कारण सामाजिक-आर्थिक स्तर पर पिछड़े होते हैं। जाति-विशेष या अलग जाति से तात्पर्य उनलोगों से है जो राष्ट्रीयता, संस्कृति और भाषा के आधार पर एक होते हैं (Betancourt & Lopez—1993) उनके अस्तित्व का मुख्य आधार उस जगह की भौगोलिक स्थिति, धर्म, समुदाय और भाषा होती है। चाहे वे कहीं भी बसते हों। सभी व्यक्तियों की कोई-न-कोई जाति होती है जो हमें विरासत में मिलती है। समुदाय से तात्पर्य उस श्रेणी से है जिसमें पुरुष एवं नारी विशेष शारीरिक शीलगुणों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी धारण करते हैं। किसी भी समुदाय के लोगों में एक सामान्य शीलगुण पाया जाता है जो अपनी विशेषता को स्वयं प्रकट करता है। जैसे—त्वचा का रंग, शरीर की बनावट इत्यादि। अतः समुदाय एक ऐसा नाम है जिसमें व्यक्ति अपने विशिष्ट शीलगुणों के आधार पर, दूसरे व्यक्तियों पर अपनी अलग पहचान बनाता है। (Macionis-1991-P. 308)। संस्कृति प्रत्येक व्यक्तियों के गुणों अवगुणों को अपने में आत्मसात कर लेती है। संस्कृति में सभी सामाजिक मूल्यों का सार होता है, परम्परायें एवं रूढ़ियाँ होती हैं और संस्कृति समाज में शक्ति का आधार होती है। कई परिभाषाओं के अध्ययन के बाद यह स्पष्ट है कि ज्ञान (Knowledge) नियम (rules) परम्परा (tradition) विश्वास (belief) और मूल्य (value) हीं व्यक्तियों के व्यवहार को संचालित करते हैं। अतः समाज और संस्कृति का व्यक्ति के जीवन में पूरा प्रभाव पड़ता है। अगर संस्कृति हीं दूषित हो, जहाँ बच्चों के पालन-पोषण पर बिल्कुल हीं ध्यान नहीं दिया जाता हो, माता-पिता का व्यवहार बच्चों के साथ दोषपूर्ण हो, संस्कार सम्बन्धी चेतना ही न हो और माता-पिता के द्वारा बच्चों का तिरस्कार किया जाता हो उस समाज के बच्चे हीन हीं नहीं उदंड भी हो जाते हैं। क्रोध उनकी विशेषता हो जाती है, फलस्वरूप उनकी शिक्षा न के बराबर होती है। व्यवहार इतना दोषपूर्ण होता है कि उनका सामंजस्य कहीं भी नहीं हो पाता है। प्रत्येक संस्कृति के बीच भिन्नता तो होती हीं है और निम्न संस्कार के कारण सांस्कृतिक अन्तर्द्वंद्व होता है। उनका आचार-विचार, शारीरिक गतिविधियाँ सभी एक-दूसरे से भिन्न होती है। अतः उनका टकराव होना जरूरी हो जाता है। अपने देश में यह अक्सर मुहर्रम के समय देखने को मिलता है जब शिया-सुन्नी आपस में झगड़ पड़ते हैं हालाँकि दोनों ही संस्कृति व समुदाय के लोग एक हीं त्यौहार मना रहे होते हैं।

ऐसे सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चे सामान्य बच्चों से बिल्कुल हीं अलग होते हैं। इनके सीखने में, संज्ञानात्मक विकास में, ध्यान देने में, प्रत्यक्षण में उनकी संस्कृति का विशेष प्रभाव पड़ता है। अगर विभिन्न संस्कृति के लोग आर्थिक रूप से भी कमजोर होते हैं तो इसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ता है। अध्ययनों के द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि अलग-अलग जाति और समुदाय के लोग समान आर्थिक-सामाजिक स्तर के होते हैं तो उनकी शिक्षा पर इसका उतना प्रभाव नहीं पड़ता। पर बच्चे जो निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से आते हैं, उनकी शिक्षा नहीं के बराबर होती है। उनकी भाषा और संस्कृति बिल्कुल अलग होती है। इन कमियों में उनका अपना दोष नहीं होता पर उन बच्चों में प्रेरणा एवं शिक्षा का अभाव पाया जाता है। वे ऐसी संस्कृति से आते हैं जहाँ नियम, कायदे, व्यवहार सभी दूषित होते हैं। चूँकि वे आर्थिक रूप से कमजोर होते

हैं इसलिए इनके सुधार के लिए भी कुछ नहीं कर पाते। फलस्वरूप अपनी जाति, संस्कृति, समुदाय के कारण अलाभान्वित हो जाते हैं।

7.3.(c) भाषा से सम्बन्धित अलाभान्वित बच्चे (Language differences and Disadvantaged Children)—भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा एक-दूसरे से सम्पर्क बनाया जाता है। संस्कृति हमेशा भाषा को प्रभावित करती है। मुख्यतया दो तरह की भाषा विभिन्नता पायी जाती है— जातिगत या प्रान्तीय भाषा (Dialect differences) और दो भाषाओं को एक साथ मिलाकर बोलना (Bilingualism) दोनों तरह की भाषा सामान्य रूप से पूरे समाज में बोली जाने वाली भाषा से अलग होती है। व्यक्तिगत या प्रान्तीय (Dialect) एक विशेष तरह की भाषा होती है जो किसी विशेष जाति में, समुदाय में या प्रदेश में बोली जाती है (भोजपुरी, मगही, मैथिली इत्यादि) और जिससे उस समूह के अस्तित्व का बोध होता है। समाज के बड़े समूह या प्राय: सभी वर्गों में जिस भाषा का सामान्य रूप से चलन होता है, उसमें प्रान्तीय भाषा को लोग स्वीकार नहीं करते हैं। जो बच्चे सामाजिक रूप से अलाभान्वित होते हैं, उन्हें भाषा सम्बन्धी कठिनाई भी होती है। वे ऐसे परिवार से आते हैं जहाँ लोग अधूरे, अस्पष्ट और अनौपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं। उनमें आपसी वार्तालाप बहुत कम होता है। ऐसे परिवार के बच्चे जब स्कूल जाते हैं तो ज्यादातर चुप हीं रहते हैं, क्योंकि उनकी भाषा उनकी संस्कृति से प्रभावित रहती है। एक-दूसरे के साथ उनका सम्पर्क सिर्फ जातीय या प्रान्तीय भाषा के माध्यम से होता है। उनका शब्दकोश बहुत सीमित रहता है। वे सही शब्द का उच्चारण नहीं कर पाते। इन भाषा सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण उन बच्चों की शिक्षा में बहुत बाधा पहुँचती है। ऐसे बच्चे शिक्षक भाषा एवं कक्षा की पढ़ाई नहीं समझ पाते हैं और न दूसरों बच्चों के साथ उनकी अंत:क्रिया हो पाती है। फलस्वरूप अपनी भाषा अलाभान्वन के कारण अपनी पढ़ाई में पीछे रह जाते और सीखने में उनकी रूचि ही खत्म हो जाती है।

7.3.(d) शैक्षिक रूप से अलाभान्वित बच्चे (Educationally disadvantaged)— अलाभान्वित बालकों का सबसे अधिक प्रभाव उनकी शिक्षा पर देखा जा सकता है। वे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक स्तर पर और भाषा के आधार पर सामान्य बच्चों से पिछड़े होते हैं। अत: इन सबका प्रभाव उनकी शिक्षा पर पड़ता है। शैक्षिक दोष से ग्रसित बालकों की भाषा अस्पष्ट होती है। उनका बौद्धिक निष्पादन (Intellectual performance) बहुत ही सीमित होता है। भारत में D. Sinha–1982 एवं B. B. Chatterjee–1982) के अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि अलाभान्वित बच्चों का बौद्धिक निष्पादन बहुत हीं अपर्याप्त होता है। इसका मुख्य कारण है परिवार में शिक्षा का अभाव। अगर शैक्षिक रूप से अलाभान्वित बच्चों के माता-पिता अशिक्षित होते हैं तो बच्चों को पढ़ाई में अपने घर से कोई सहयोग नहीं मिल पाता है। चूँकि सामान्य बच्चों के माता-पिता से इनके माता-पिता हीन होते हैं। बच्चे उन्हें अपने स्कूल ले जाना भी नहीं पसन्द करते। उन्हें या तो शर्म आती है या अपने आपको बहुत ही हीन समझने लगते हैं। उनके अभिभावकों के साथ स्कूल में भी भेदभाव किया जाता है। ऐसे बच्चों पर शिक्षक भी ध्यान नहीं देते हैं। इसलिए वे कक्षा की पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं और कभी-कभी असफल (fail) भी हो जाते हैं। ज्यादा कठिनाई आने पर स्कूल भी छूट जाता है। वे इधर-उधर भटकने लगते हैं। अपराधिक प्रवृत्तियों पर ध्यान देने लगते हैं और बाल अपराध के शिकार हो जाते हैं।

अलाभान्वन एवं वंचन के बहुत हीं गंभीर परिणाम होते हैं। इस पूरे विश्व में जो असंतोष एवं हिंसा

व्याप्त है, वह सामाजिक अलाभान्वन का हीं परिणाम है। अलाभान्वन एवं वंचन दोनों को बुरा प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

अलाभान्वित बालकों के सामाजिक वातावरण एवं आर्थिक स्थिति में कमी के कारण उनकी शिक्षा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले बच्चे प्राय: भोजन और वस्त्र भी पर्याप्त रूप से नहीं पाते हैं। ऐसी अवस्था में उनका ध्यान वर्ग की पढ़ाई में कैसे लग सकता है ? ऐसे अलाभान्वित बच्चे का ध्यान वर्ग की पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता है। वे स्वयं तो कुछ सीखने नहीं और दूसरों के लिए समस्या खड़ी कर देते हैं। वे अपनी अवस्था की तुलना अच्छे लाभान्वित परिवार के बच्चों के साथ करने लगते हैं और उनकी समस्या और भी गंभीर हो जाती है। फलस्वरूप पढ़ाई में ध्यान न देने के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि बहुत कम हो जाती है और उन्हें एक कक्षा की पढाई को दुहराना पड़ता है या स्कूल छोड़ने की नौबत भी आ जाती है। उनके व्यवहार में दोष आ जाता है और वे आपराधिक गतिविधियों से जुड़ने लगते हैं। इसके कई मनोवैज्ञानिक परिणाम होते हैं।

अलाभान्वन के कारण उनके संज्ञानात्मक पैटर्न पर गहरा प्रभाव होता है। कई अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि अलाभान्वित बच्चों के चिन्तन प्रत्यक्षण, बुद्धि, संवेदना, स्मरण आदि क्रियाओं पर वंचन का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है (J. P. Das, Jachuk & T. P. Panda, 1970) N. Chattopadhyay ने अपने प्रयोगों के आधार पर सिद्ध किया है हरिजन परिवार या जनजाति के बालकों का बौद्धिक निष्पादन (performance) सामान्य बालकों के निष्पादन की अपेक्षा बहुत कम होता है। यही नहीं, अलाभान्वित बालकों का प्रत्यक्षणात्मक कौशल (perceptual skill) और अमूर्त्त चिन्तन (abstract thinking) भी सामान्य बच्चों से बहुत कम पाया गया है। (Havinghurst–1964).

अलाभान्वित बालकों में प्रेरणा (motivation) की भी कमी पायी जाती है। D. Sinha & S. Mishra (1982) ने अपने अध्ययनों में यह पाया कि अलाभान्वन एवं वंचन से बच्चों की शिक्षण उपलब्धि आवश्यकता से अधिक कम हो जाती है और निर्भरता आवश्यकता से अधिक हो जाती है। (Rulk–1984) ने अपने अध्ययन में पाया कि वंचन का प्रभाव बच्चों के आकांक्षा स्तर पर भी पड़ता है। इनकी शिक्षण उपलब्धि प्रत्येक वर्ग में नीची होती है (A. K. Singh–1983)। सीमित आय एवं शिक्षा की कमी के कारण उनकी आकांक्षा निम्न स्तर की होती है। आगे बढ़ने की न ईच्छा होती है और कोशिश। फलस्वरूप कुछ भी अच्छा करने की आकांक्षा ही नहीं होती है।

इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि अलभान्वन का प्रभाव बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा होता है। अलाभान्वित बच्चों की शिक्षा समाज और शिक्षक दोनों के आगे एक बड़ी चुनौती होती है, इसलिए शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अलाभान्वित बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष ध्यान देने की सिफारिश की है।

7.4 अलाभान्वित बालकों की शिक्षा (Education of disadvantaged children)

निम्न सामाजिक स्तर आर्थिक तनावहीन शैक्षिक पृष्ठभूमि एवं भाषा और सांस्कृतिक भिन्नता के कारण अलाभान्वित बच्चों की प्रेरणा एवं शिक्षण में समस्या उत्पन्न हो जाती है हालाँकि इसमें उन बालकों का कोई दोष नहीं होता है। अलाभान्वित बालकों की शिक्षा पर विदेशों और देश में भी विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

अमेरिका जैसे उन्नत देश में दसवीं तक की शिक्षा नि:शुल्क कर दी गयी है। एक क्षेत्र के रहने वाले (area) प्रत्येक बच्चे की शिक्षा अनिवार्य है चाहे वे किसी उन्नत सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक स्तर के हों या अलाभान्वित। उनकी सरकार की ओर से यह प्रयास किया गया है कि अलाभान्वित बच्चों के साथ कोई भेद भाव नहीं हो और उनकी शिक्षा सुचारू रूप से चले। पर कितने ऐसे कारक हैं जिनके कारण बच्चे सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर पिछड़ जाते हैं। अमेरिका में ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए कानून भी बनाया गया है जिसके अन्तर्गत बच्चों की शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है। इसके अलावा विशेष परियोजनाएँ भी चलायी जाती हैं जिससे उनकी प्रेरणा एवं अभिरूचि का विकास किया जा सके। वहाँ स्कूलों के बहु-सांस्कृतिक शिक्षा (multicultural education) की सुविधा भी दी जाती है जिससे विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक समूह की भिन्नता को दूर किया जा सके।

भारत में भी अलाभान्वित बालकों के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिंए कई प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसे अलाभान्वित बालकों के लिए नि:शुल्क शिक्षा योजना (Free education project) लागू की गयी है जिसके अन्तर्गत बच्चों के नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। दोपहर के भोजन की भी व्यवस्था की गयी है जिससे भूख के कारण बच्चों का ध्यान शिक्षा से न हट पाये। उन्हें पाठ्य-पुस्तकें भी मुफ्त दी जाती हैं। सामाजिक-आर्थिक रूप से हीन बच्चों की पढ़ाई के लिए कम अंक पाने पर भी नामांकन की सुविधा दी गयी है। इन सुविधाओं का परिणाम प्रारंभ में तो ठीक निकला और स्कूल से भागने वाली प्रवृत्ति कम हुई पर बाद में इस योजना का प्रभाव घट गया। बच्चों के मानसिक क्षमता में कोई वृद्धि नहीं हुई। वास्तव में निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर और दोषपूर्ण संस्कृति का प्रभाव इतना अधिक होता है कि उनकी शैक्षिक क्षमता में कोई वृद्धि नहीं होती।

अलाभान्वित बच्चों की शैक्षणिक क्षमता बढ़ाने में शिक्षकों की अहं भूमिका होती है। आर्थिक रूप से अलाभान्वित बच्चे चूँकि बहुत ही निम्न सामाजिक स्तर से आते हैं, उनका रहन-सहन भी उसी के अनुरूप होता है। एक हीं कक्षा में सामाजिक-आर्थिक सांस्कृतिक कई विभिन्नताएँ पायी जाती हैं। अत: शिक्षक को सभी विभिन्नताओं में संतुलन कायम रखते हुए व्यवहार करना चाहिए। शिक्षकों के शैक्षिक प्रोग्राम में समय-समय पर सुधार होना चाहिए। उन्हें सामाजिकता का क्षेत्र अनुभव होना चाहिए जिससे वे इन सामाजिक विभिन्नताओं का मनोवैज्ञानिक कारण जान सकें। उन्हें सामान्य एवं अलाभान्वित बच्चों के माता-पिता के बीच जाति, सामाजिक-आर्थिक स्तर पर या संस्कृति के आधार पर भेदभाव नहीं रखना चाहिए। इस तरह के भेद-भाव रखने से बच्चों के आत्मधारणा की क्षति होती है जिसका उनके प्रेरणात्मक व्यवहार पर असर पड़ता है। कभी शिक्षक यह समझते हैं कि अलाभान्वित बच्चों का शैक्षिक निष्पादन अच्छा हो हीं नहीं सकता। इस गलत धारणा का प्रभाव बच्चों के चेतन व्यवहार पर पड़ता है। इसलिए शिक्षक को बच्चों के साथ सकारात्मक व्यवहार या रवैया (positive altitude) अपनाना चाहिए।

सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चों की शिक्षा के लिए बहु-सांस्कृतिक शिक्षा की योजना बनानी चाहिए। इस तरह की योजना में प्रत्येक सुझाव देना चाहिए। इससे समूह में समानता रखी जा सकती है।

अपने देश अलाभान्वित बालकों की शिक्षा के लिए कई सुझाव दिये गये हैं। सबसे पहले उनके घरेलू वातावरण में सुधार लाना चाहिए और इसमें सुधार लाने के लिए :-

(i) उनके स्वास्थ्य, पौष्टिकता और देखरेख में सुधार की आवश्यकता

(ii) प्रारम्भिक शिक्षा (pre-school) शिक्षा का प्रावधान

(iii) माता-पिता में शिक्षा सम्बन्धी जागरूकता पैदा करना और उन्हें भी शिक्षित करना।

(iv) इनके सांस्कृतिक दोषों को दूर करने का प्रयास करना। अगर घरेलू वातावरण में सुधार होगा तो शिक्षा में रूचि अपने-आप बढ़ेगी।

(2) उन्हें अतिरिक्त साधनों की सुविधा देना। अगर उन्हें प्रचार के आधुनिक साधन जैसे रेडियो, टेलीविजन, श्रव्य दृश्य साधन (Audio-Visual aids) आदि की सुविधा दी जाएगी तो उनकी रूचि शिक्षा की ओर बढ़ेगी और विशेष शैक्षिक अभियान से अलाभान्वित बच्चे लाभान्वित हो जायेंगे।

(3) हम सभी जानते हैं कि सरकार की ओर से जितनी योजनाएँ चलती हैं उनका कार्यान्वयन सही ढंग से नहीं हो पाता है। इसका उदाहरण आँगन-बाड़ी शिक्षा-योजना है जिसमें शिक्षा के नाम पर सिर्फ खिचड़ी बाँटने का काम होता है वह भी दोषपूर्ण। सरकार के समय-समय पर इन योजनाओं का मूल्यांकन करना चाहिए। उससे योजनाओं की सफलता का पता चलेगा। अगर योजना असफल भी हुई है तो इनके कारणों का पता लगाना चाहिए ताकि उनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाकर प्रभावशाली बनाया जा सके।

(4) अलाभान्वित बालकों की शिक्षा के स्तर को ऊँचा बनाने के लिए व्यवहार परिमार्जन की सलाह भी दी गयी है। सामान्य कक्षा में इसका प्रयोग संभव नहीं है क्योंकि वर्ग में बहुत सारे बच्चे होते हैं फिर भी थोड़ी-सी कोशिश करने से उनसे प्रत्यक्षात्मक प्रशिक्षण का विशेष उपयोग कर उनके व्यवहार में बदलाव लाया जा सकता है। इन प्राविधियों के उपयोग से उनकी संज्ञानात्मक अपूर्णता को भी काफी हद तक दूर किया जा सकता है। इन सभी साधनों के उपयोग से पहले उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहिए। आर्थिक स्थिति सुधारने से उनका सामाजिक स्तर भी सुधरेगा और सामाजिक स्तर सुधरने से वे अपनी सांस्कृतिक कमियों को दूर करने की चेष्टा करेंगे। संस्कार सही होंगे तो शिक्षा की तरफ ध्यान जायेगा और अलाभान्वित बच्चे भी शिक्षा की उपयोगिता को समझ कर अपनी शैक्षिक क्षमताओं को बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

7.5 सारांश (Summary)

1. अलाभान्वित बच्चों से तात्पर्य उन बच्चों से है जो बाह्य कारणों से किसी ने किसी सुविधा से वंचित रह जाते हैं। इस अलाभान्वन में उनकी अपनी गलती नहीं होती है।

2. ऐसे बच्चे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक रूप से पिछड़े समुदाय से आते हैं। गरीबी और वंचन उनकी प्रधानता होती है।

3. भारत वर्ष में आदिवासी, हरिजन समुदाय से आने वाले बच्चों को अलाभान्वित की श्रेणी में रखा गया है जिनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं कुछ पिछड़ी (backword) जातियाँ शामिल हैं।

4. अलाभान्वित बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पिछड़े होते हैं क्योंकि उनकी बौद्धिक क्षमता कम होती है।

5. अलाभान्वित बच्चे कई प्रकार के होते हैं। उनमें सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषा सम्बन्धी एवं शैक्षिक अलाभान्वन प्रमुख हैं।

6. अलाभान्वन के कई मनोवैज्ञानिक परिणाम होते हैं जिसका प्रभाव उनके संज्ञानात्मक, अभिप्रेरणात्मक पैटर्न और शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

7. अलाभान्वित बालकों की शिक्षा के लिए देश-विदेश में कई प्रयास किये जा रहे हैं। भारत में भी ऐसे बच्चों की शिक्षा के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं क्योंकि शिक्षा से हीं उनकी स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

7.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. अलाभान्वित बालकों से आप क्या समझते हैं? उसकी समुचित परिभाषा दीजिये।
2. अलाभान्वन के कौन-कौन-से मनोवैज्ञानिक परिणाम होते हैं—इसकी व्याख्या कीजिए।
3. अलाभान्वन एवं वंचन कितने प्रकार का होता है, उचित उदाहरण देकर इसकी विवेचना करें।
4. अलाभान्वित बालकों की शिक्षा का कार्यक्रम तैयार करें।
5. निम्नलिखित किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखें—
   (a) सांस्कृतिक रूप से अलाभान्वित बच्चे
   (b) घरेलू वातावरण का शिक्षा पर प्रभाव
   (c) अलाभान्वित बालकों की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका